राजस्थान के वस्त्र और आभूषण

☛ **कसूमल का मतलब कौनसा रंग होता है?**
(1) सफेद (2) लाल
(3) पीला (4) गुलाबी (2)

व्याख्या–राजस्थान की संस्कृति में रंगों का विशेष महत्व है। लाल रंग का सबसे अधिक महत्व है। लाल रंग का सबसे अधिक महत्व है। इसलिये कहा जाता है 'मारू थारे देश में उपजै तीन रतन, इक ढोला, दूजी मरवण तीजो कसूमल'।

☛ **अटपटी, अमरशाही, उदेशाही, खंजरशाही, शिवशाही, विजयशाही और शाहँजहानी किसके प्रकार है?**
(1) पगड़ी (2) अंगरखी
(3) सिक्के (4) कुर्त्ता (1)

व्याख्या–मोठडे की पगड़ी विवाह उत्सव, लहरिया पगड़ी श्रावण में, दशहरे पर मदील तथा फूल पत्ती की छपाई वाली पगड़ी होली पर पहनते हैं।

- सुनार आटे वाली पगड़ी का व बंजारे मोटी पट्टेदार पगड़ी का प्रयोग करते हैं।
- मेवाड़ में पगड़ी बाँधने वाले को छाबदार कहा जाता है।
- राजस्थान में पगड़ी बाँधने में प्रसिद्ध व्यक्ति सूरज बक्श (जयपुर) था।
- पगड़ी को चमकीली बनाने हेतु तुर्रे, सरपेच, बालाबंदी, घुगघु, गी, गोसपेच, पछेवडी, लटकन, कलंगी, फतेपेच आदि का प्रयोग होता है।

☛ **पुरुषों द्वारा कंधों पर धारण किये जाने वाले वस्त्र, खेस, शाल, पामड़ी आदि का प्रयोग किस ऋतु में किया जाता है?**
(1) वर्षा (2) ग्रीष्म
(3) शरद (4) कोई नहीं (3)

☛ **किस अवसर पर राजस्थान की स्त्रियाँ लहरिया भांत की ओढ़नी तथा पुरुष लहरिया पगड़ी पहनते हैं?**
(1) दशहरा (2) दीपावली
(3) गणगौर (4) तीज (4)

व्याख्या–लहरिये दो, तीन, पाँच, सात रंगों में बनाए जाते है जिसमें 5 संख्या को शुभ माना है इसलिये पंचरंगी लहरिये की विशेष मान्यता है।

☛ **तनसुख, दुतई, गाबा, गदर, मिरजाई, डोढ़ी, कानो, डगला आदि किसके प्रकार हैं?**
(1) अंगरखी (2) पगड़ी
(3) सिक्के (4) कुर्त्ता (1)

व्याख्या–अंगरखी–यह शरीर के ऊपरी भाग पर पहना जाने वाला आभूषण है।

- अंगरखी को उसके आकार के अनुसार विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे तनसुख, दुताई, गाबा, गदर, मिरजाई, डोढ़ी, कानो, डगला आदि।
- फर्रूखशाही भी अंगरखी का प्रकार है।
- ग्रामीण आंचल में अंगरखी आमतौर पर सफेद रंग का पुरुषों का अंगवस्त्र होता है बुगतरी कहा जाता है।

☛ **निचोल, चोल, पट, दुकूल, अंसुक, वसन, चीर, पटोरी, चोरसो, ओढ़नी, चुदंड़ी, धोरावाड़ी आदि किसके प्रकार हैं–**
(1) पगड़ी (2) अंगरखी
(3) साड़ी (4) सिक्के (3)

व्याख्या–निचोल, चोल, पट, दुकुल, अंसुक, वसन, चीर, पटोरी, चोरसो ओढ़नी, चुँदड़ी, धोरावली, साड़ी आदि साड़ियों के प्रकार है।

- चूदंड़ी व लहरिये का राजस्थान में विशेष स्थान है।
- **राजस्थान की प्रसिद्ध साड़ियाँ–**
  1. सूंठ की साड़ियाँ–सवाईमाधोपुर
  2. जेनब की साड़ियाँ–कसुंआ गाँव (कोटा)
  3. मसूरिया साड़ी/कोटा डोरिया–कैथून (कोटा)

☛ **सवाई जयसिंह द्वारा स्थापित 36 कारखानों में से वस्त्र से संबंधित निम्न कारखानों में असंगत को पहचानिये-**
(1) सींवनखाना – कपड़े सिलाई से संबंधित
(2) रंगखाना – कपड़ों की रंगाई से संबंधित
(3) छापाखाना - कपड़ों की छपाई से संबंधित
(4) उपरोक्त सभी सही सुमेलित है। (4)

व्याख्या–कपड़ों की रंगाई का काम रंगरेज या नीलगर करते है। रंगाई के प्रमुख प्रकारों में पोमचा, लहरिया, चूनरी, चौकड़ी, चौकड़ी का जाल, पतंगा आदि प्रमुख है।

☛ निम्न में से कौनसा समूह स्त्रियों के परिधानों से संबंधित नहीं है?

(1) चुंदड़ी, लहरिया, जामदानी, किमखाब, टसर, छींट, मलमल।
(2) कुर्ती, कांचली, घाघरा, लहंगा, पारचा, चिक, इलायची, महमूदी चिक, मीर-ए-बादला।
(3) नौरंगशाही, बहादुरशाही, फर्रूखशाही छींट, बाफ्ता, मोमजामा, गंगाजली आदि।
(4) अंगरखी, बुगतरी, फेंटा, धोती, कमीज, खेस, पामड़ी आदि। (4)

☛ निम्न में से गलत कथन की पहचान करे-

(1) सीकर (शेखावाटी) की बंधेज बारीक बंधेजों में गिनी जाती है।
(2) 'बद्ध' तकनीक में चुनरी के बंधेज सर्वाधिक लोकप्रिय है।
(3) जोधपुर की बनी चूनरी के रंग बड़े चमकीले, टिकाऊ और बंधेज बारीक होती है।
(4) पहले राजस्थान में मलयगिरी अर्थात् लाल रंग में रंगा हुआ वस्त्र वर्षों तक सुगंधित रहता था। (4)

व्याख्या–मलयगिरी भूरे रंग में रंगा हुआ वस्त्र होता था। सिटी पैलेस में रखी सवाई रामसिंह द्वितीय की अंगरखिया अभी तक सुगंधित है।

☛ 'अमोवा' का प्रयोग निम्न में से किसके द्वारा किया जाता था?

(1) साहुकार वर्ग (2) शिकारी वर्ग
(3) धनी वर्ग (4) शासक वर्ग (2)

व्याख्या–इसका रंग भी खाकी रंग से मिलता-जुलता था।

☛ निम्न में से गलत तथ्य की पहचान करे-

(1) अजरख के अलंकरण ज्यामितीय होते है और तुर्की टाइलों से बहुत मिलते है।
(2) आहड़ और भीलवाड़ा के मुख्य रूप से लाल और काले रंग में चुनरी की छपाई होती है।
(3) आकोला में बड़े पैमाने पर छपाई के कारण यह कस्बा 'छीपो का आकोला' कहलाता है।
(4) आकोला अपने स्याह बैगर (काला-लाल) छपाई के लिये विख्यात है। (4)

व्याख्या–बगरू (जयपुर) अपने स्याह बैगर छपाई के लिये विख्यात है। जिसमें मटिया रंग की जमीन पर लाल-काले रंग में फूल-पत्ती, पशु-पक्षी और अनेक प्रकार के संयोजन बनाए जाते है।

☛ निम्न में से किसे हैण्डीक्राफ्ट से संबंधित श्रेणी में भौगोलिक संकेतक प्राप्त हो चुका है?

(1) सांगानेरी हैंडब्लॉक प्रिंट (2) बगरू हैंडब्लॉक प्रिंट
(3) कोटा डोरिया (4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–भौगोलिक संकेतक औद्योगिक संपत्ति का एक पहलू है, जो किसी उत्पाद के देश या उत्पत्ति स्थान का हवाला देते है। जो ऐसी गुणवत्ता एवं विशिष्टता का आश्वासन देते है जिनका संध अनिवार्य रूप से उस परिभाषित भौगोलिक स्थान, क्षेत्र या देश के साथ होता है।

☛ निम्न में से संगत को पहचानिए-

(1) मसुरिया, तनसुख – कैथून, मांगरोल
(2) मलमल – मथानिया (जोधपुर)
(3) टूकड़ी – जालोर, मारोठ कस्बा
(4) सभी सुमेलित है। (4)

☛ सूती ताने पर बादले के बाने से बुनी बेल को कहते है-

(1) टूकड़ी (2) गोटा
(3) चटापटी (4) मोठड़ा (2)

व्याख्या–चौड़ा गोटा लप्पा व कम चौड़ाई वाला लप्पी कहलाता है। चौड़ाई के अनुसार गोटा चौमास्या, आठमास्या आदि प्रकार के होते है।

☛ नवजात शिशु की माँ के लिए मातृ पक्ष द्वारा बेटे के जन्म पर किस रंग का पोमचा देने की परंपरा है?

(1) हरा (2) गुलाबी
(3) लाल (4) पीला (4)

व्याख्या–राजस्थान में पोमचा वंश वृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

- बेटे के जन्म पर पीला व बेटी के जन्म पर गुलाबी पोमचा देने की परंपरा है।
- पोमचा जयपुर की प्रसिद्ध है जबकि पीला पोमचा शेखावाटी का प्रसिद्ध है।
- पोमचा का अर्थ – कमल फूल के अभिप्राय युक्त ओढ़नी।

☛ साहित्य में किस लहरिये का उल्लेख मिलता है?

(1) राजशाही (2) प्रतापशाही
(3) उदयशाही (4) डूँगरशाही (2)

व्याख्या–समुद्र लहर का लहरिया–जयपुर के रंगरेज रंगते हैं। मांगलिक अवसर पर पचरंगी लहरिया पहना जाता है।

- जयपुर के रंगरेज और नीलगर राजशाही लहरिया रंगते थे जिसमें चमकदार गुलाबी रंग की आड़ी रेखाएँ बनती थी। आड़ी धारियाँ केवल एक ओर से हो तो वह लहरिया तथा दोनों ओर से एक दूसरे को काटती हुई आ रही हो तो मोठड़ा कहलाता है।

☛ निम्न में से किसके लिये मारवाड़ में "दामणी" शब्द का प्रयोग हुआ है?
(1) ओढ़नी का एक प्रकार (2) राजस्व कर
(3) एक वस्तु का प्रकार (4) जूतियाँ (1)

☛ बुगतरी के लिये सही विकल्प को चुने–
(1) शहरी महिलाओं का वस्त्र
(2) ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों के शरीर के ऊपरी भाग में पहना जाने वाला वस्त्र।
(3) शहरी क्षेत्र में पुरुषों के शरीर के ऊपरी भाग में पहना जाने वाला वस्त्र।
(4) ग्रामीण महिलाओं का वस्त्र। (2)

☛ शेखावाटी में अलग अलग रंग के कपड़ों को विविध डिजाइनों में काटकर कपड़े पर सिलाई की जाती है यह कहलाता है?
(1) पैचवर्क (2) थेवा कला
(3) मलीर प्रिंट (4) बंधेज (1)

☛ गोटा, लप्पा, लप्पी एवं बांकडी यह किसके प्रकार है?
(1) आभूषण के प्रकार
(2) वस्त्रों के प्रकार
(3) गोटे के भिन्न भिन्न प्रकार
(4) उपर्युक्त सभी (3)

व्याख्या–लप्पा, लप्पी, किरण, बांकडी, गोखरू, नक्शी आदि गोटे के प्रकार हैं।
- चौड़ा गोटा लप्पा व कम चौड़ाई वाला गोटा लप्पी कहलाता है। राजस्थान में सीकर जिले का खण्डेला गाँव गोटा उद्योग का प्रसिद्ध केन्द्र है।

☛ अजरख प्रिंट का संबंध है?
(1) जयपुर (2) जोधपुर
(3) बाड़मेर (4) बीकानेर (3)

व्याख्या–अजरख प्रिंट व मलीर प्रिंट बाड़मेर की प्रसिद्ध है।
- खत्री जाति के लोग इनका कार्य करते हैं।
- जब छपाई दोनों तरफ हो तो अजरख प्रिंट व जब छपाई एक तरफ हो तो मलीर प्रिंट होता है।
- अजरख प्रिंट में लाल व नीले रंग से छपाई की जाती है जबकि मलीर प्रिंट में काला व कत्थई रंग का प्रयोग होता है।
- यह प्रिंट बालोतरा की प्रसिद्ध है। बालोतरा का यासीन छीपा इस प्रिंट का प्रसिद्ध बेहतरीन कलाकार है।

☛ थैवा कला किस जिले से संबंधित है?
(1) जयपुर (2) प्रतापगढ़
(3) चित्तौड़गढ़ (4) जोधपुर (2)

व्याख्या–काँच पर चाँदी या सोने के सूक्ष्म चित्राँकन की कला को थेवा कला कहा जाता है। थेवा कला के लिए प्रतापगढ़ का सोनी परिवार प्रसिद्ध है।

☛ असत्य कथन को छाँटिए–
(1) कागजी टौराकोटा – अलवर
(2) मथैरण कला – बीकानेर
(3) हस्तशिल्प कागज
(4) मथानिया का मलमल – जयपुर (4)

☛ बोर, बोरला, शीशफूल, रखड़ी और टिकड़ा आभूषण महिलाओं द्वारा शरीर के किस अंग पर धारण किये जाते हैं–
(1) सिर (2) गला
(3) पैर (4) हाथ (1)

व्याख्या–बोरला, शीशफूल, रखड़ी, टीडी भलको, (ललाट का आभूषण) टिकड़ा, टीका सॉकली, तावित, मेमंद, मांगफूल, सुरमंग आदि आभूषण सिर पर पहने जाते हैं।

☛ बगरू अपने स्याह बैगर (काला लाल) छपाई के लिए विख्यात है, यह किस जिले में है?
(1) जयपुर (2) बाड़मेर
(3) जोधपुर (4) उदयपुर (1)

व्याख्या–बगरू प्रिंट के प्रसिद्ध कलाकार रामकिशोर छीपा है जिन्हें 2009 में पद्मश्री पुरस्कार भी मिल चुका है।

☛ तुर्रे सरपेच, बालाबंदी, धुगधुगी, गोसपेच, पछेवडी, लटकन, फतेपेच आदि का प्रयोग किसमें होता है?
(1) बुखतरी (2) कुर्त्ता
(3) पगड़ी (4) अंगरखी (3)

व्याख्या–तुर्रे सरपेच, बालाबंदी, धुगधुगी, गोसपेच, पछेवडी, लटकन फतेपेच आदि का प्रयोग पगड़ी में किया जाता है।

☛ निम्न में से कौनसा स्थान गोटा उद्योग के लिए प्रसिद्ध है?
(1) खंडेला (सीकर) (2) ब्यावर (अजमेर)
(3) सोजत (पाली) (4) आसीन्द (भीलवाड़ा) (1)

☛ थमण्यो, थेड्यो, आड़, मुठया, झालरा, टुस्सी, आभूषण, शरीर के किस अंग पर धारण किये जाते हैं?
(1) सिर (2) कण्ठ
(3) हाथ (4) पैर (2)

व्याख्या–सुरलिया हार, कण्ठी मटमाला, टुस्सी, झालर, जंजीर, हंसली, पंचलडी, तिमणिया, चंदन हार, चम्पा, कली, मोद्यरन, मंडली, मोहनमालाल, होलरो, खंगाली, गुलीबंद, जंतर, रानीहार, जुगावली, सरी, मांदलिया, कंठमाला, हालरो, तुलसी, बजट्टी, पोत, चन्द्रहार, बलेवडा, निम्बोरी आदि आभूषण महिलाओं के कंठ/गले के आभूषण है।

परीक्षा दृष्टि

★ स्त्रियों के परिधानों के लिए प्रचलित कपड़े
-मीर-ए-बादला, नौरंगशाही, बाफ्ता, गंगाजली, किमखाब, टसर, मसरू, पारचा, जामदानी, इलायची

★ कमल फूल के अभिप्राय युक्त ओढ़नी 'पोमचा' कहलाती है।
बेटी के जन्म पर–गुलाबी पोमा
बेटे के जन्म पर–पीला पोमचा

★ लप्पा, लप्पी, किरण, बांकड़ी–**गोटे के प्रकार**

★ पेचवर्क का काम शेखावाटी में प्रसिद्ध

★ हाथों में पहने जाने वाले आभूषण–**कंकण, मोकड़ी, कात्रया (काँच की चूड़ी) नोगरी, चांट, गजरा, गोखरू आदि।**

★ नाक के आभूषण–**बेसरि, बाली, भोगली, कांटा, चूनी, चोप भँवरकड़ी**

★ सीकर का खण्डेला क्षेत्र गोटा के लिए प्रसिद्ध है।

☛ **तुलसी, बजट्टी, हालरो, हांसली, तिमणिया, पोत, चंद्रहार, कंठमाला, हमेल, हांकर, मादलिया, चपकली, हंसहार, सरी, कंठी, आभूषण स्त्रियाँ कहाँ पहनती हैं–**

(1) सिर (2) पैर
(3) गला (4) दाँत (3)

व्याख्या–गले और वक्ष पर
- धारण किये जाने वाले आभूषणों में–
तुलसी, बजट्टी, हालरो, हंसली, तिमणिया, पोत, चन्द्रहार, कंठमाला, हमेल, हांकर, मांदलिया, चपकली, हंसहार, सरी, कंठी, रामनवमी आदि प्रमुख है।

☛ **कर्ण फूल, पीपल पत्रा, फूल झुमका, अंगोट्या, झेला, लटकन, टोटी आभूषण शरीर में कहाँ पहना जाता है?**

(1) नाक (2) अंगुली
(3) कान (4) गला (3)

व्याख्या–झुमका, बाली, टॉप्स, मुरकीया, लोंग, कर्णफूल, पत्ती, सुरलिया, पीपल पत्रा, अंगोदया, झेला, लटकन, जमेला, फूल झुमका, टोटी (टीडी) आदि आभूषण महिलाओं के कान के आभूषण हैं।

☛ **कड़ा, कंकण, मोकडी, कातरया, नोगरी, चांट, गजरा, गोखरू, चूडी आभूषण शरीर के किस भाग से संबंधित हैं?**

(1) कान (2) नाक
(3) हाथ (4) पैर (3)

व्याख्या–महिलाओं के शरीर के हाथ के आभूषण–कड़ा, चूड़ी, पूणछी, हथफूल, बंगड़ी, कांकणी, गोखरू, गजरा, पट, दस्तबंध, नौगरी, छला, अरसी, पाटला, कंगन, कातरया, (काँच की चूड़ियाँ) पांट आदि।

☛ **बींटी, दामणा, हाथपान, छाडा आभूषण शरीर के किस भाग से संबंधित है?**

(1) अंगूलिया (2) पाँव
(3) सिर (4) गला (1)

व्याख्या–हाथ की अंगूलियों के आभूषण–बिंटी/अंगूठी, मून्दड़ी, मुद्रिका, दामना, छल्ला, अरसी, हथपान, हथफूल आदि।

☛ **कड़ा, लंगर, पायल, पायजेब, घुंघरू, नूपुर, झांझर, नेवरी, आभूषण कहाँ पहना जाता है?**

(1) पैर (2) हाथ
(3) सिर (4) गला (1)

व्याख्या–कड़ा, लंगर, पायल, पायजेब, घुंघरू, नूपुर, झांझर, नेवरी, टनका, रिमझोल, शाकुंतला, हिरणामेन, आँवला, वेधड, लछने, आदि महिलाओं के पैर के आभूषण है।

☛ **नथ, बेसर, बारी, भोगली, कांटा, चुनी, चोप, भंवरकडी, आभूषण महिलाओं द्वारा पहना जाता है?**

(1) पैर (2) कान
(3) नाक (4) हाथ (3)

व्याख्या–नथ, बेसर, बारी, भोगली, कांटा, चुनी, चोप, भंवरकडी, फिणी, लौंग, चूनी, खीवण, बलनी आदि।

☛ **कंदोरा या करधनी स्त्रियाँ कहाँ धारण करती हैं?**

(1) हाथ (2) कमर
(3) नाक (4) कान (2)

व्याख्या–स्त्रियों के कमर के आभूषण–कणकती, करधनी, कंदोरा सटका, तकडी या तागड़ी, सांकली आदि।

☛ **चूँप स्त्रियाँ कहाँ धारण करती हैं?**

(1) कान (2) नाक
(3) दाँत (4) कमर (3)

व्याख्या–दाँत के आभूषण–चूँप, रखन, धेंस, मेख।
- रखन - दांतों में सोने के पत्तर को खोल बनाकर चढ़ाना।
- चूंप - स्त्री द्वारा दांतों के बीच में सोने की कील जड़वाना।

☛ **मुरकियाँ, लोंग, झाले, छैलकडी, आभूषण पुरुष कहाँ पहनते हैं?**

(1) कान (2) दाँत
(3) पैर (4) हाथ (1)

☛ अंगूठी, बिठीया व मुंदड़ियां आभूषण पुरुष कहाँ पहनते हैं?
(1) दाँत (2) कान
(3) अंगूलियाँ (4) पैर (3)

☛ काँच से निर्मित चूड़ी कहलाती है?
(1) कातर्‌या (2) मोकडी
(3) कडूल्या (4) झांझरया (1)

व्याख्या–लाख से निर्मित चुड़ियां मोकड़ी कहलाती है।

☛ पछेवड़ा -
(1) कपड़ा
(2) पगड़ी
(3) ओढ़ने वाला मोटा वस्त्र
(4) गोटा (3)

☛ जालोर जिला मुख्यालय से 5 किमी. दूर स्थित लेटा गाँव निम्न में से किसके लिये जाना जाता है?
(1) दरिया के लिए (2) खेसले के लिए
(3) गलियों के लिए (4) पगड़ियों के लिए (2)

☛ आदिवासियों द्वारा पहने जाने वाला सबसे प्राचीन वस्त्र कौनसा है?
(1) चूँदड़ी (2) घाघरा
(3) कुर्त्ता (4) कटकी (4)

☛ ताराकशी के लिए प्रसिद्ध है?
(1) नाथद्वारा (2) आकोला
(3) मथानिया (4) ब्यावर (1)

व्याख्या–तारकशी एक ऐसी कला है जिसमें पीतल, ताँबे या चाँदी के तारों को लकड़ी में जड़ा जाता है।

☛ अंगोटिया आभूषण मानव शरीर के किस भाग में पहना जाता है?
(1) गला (2) कमर
(3) नाक (4) कान (4)

☛ बच्चों के आभूषण के बारे में कौनसा कथन सत्य है?
(1) बच्चों के कंठ में हंसुली, हाथ और पाँव में कड़े और कानों में मोती या लूंग पहनाये जाते हैं।
(2) हाथ और पाँव के कड़ों को 'कडुल्या' कहा जाता है।
(3) पाँव में पहने जाने वाली पतली साकली जिसमें घूघरियाँ फांद दी जाती है। 'झांझरिया या झांझरया खिलाटी' इसे पैंजणी भी कहा जाता है।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

☛ रानी छींतरी में सोने का खेरा, मूंग का आखा और रतचनण बांधकर तैयार किया गया बच्चों के कंठ का शृंगार जिससे रत्यावड़ी (गांठ गूमड़) न हो क्या कहलाता है?
(1) ताबीज
(2) नजट्या
(3) माला
(4) सांकली (2)

☛ बच्चों के कान में पहनाये जाने वाली ठोस सोने की कुड़क क्या कहलाती है?
(1) लूंग
(2) गुदड़ा
(3) मुरकी
(4) कर्णफूल (3)

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- ***Rajasthanclasses.in***

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF